रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

बच्चों के व्यक्तित्व विकास और उन्हें संस्कारवान बनाने की अनूठी पहल है

"गर्भ संस्कार ज्ञान विज्ञान" – कुलपति प्रो. मिश्र

महिला अध्ययन एवं शोध केन्द्र में बैठक का आयोजन

जबलपुर 24 नवम्बर। वर्तमान समय में सबसे अधिक ध्यान बच्चों पर देने की आवश्यकता है। बच्चे ही समाज एवं राष्ट्र का भविष्य हैं। यदि इन्हें संस्कारवान एवं प्रतिभाशाली बनाना है तो, इन पर विशेष रूप से ध्यान भी जरूरी है। निश्चित रूप से इससे परिवार, समाज, राष्ट्र एवं विश्व का कल्याण हो सकता है । "गर्भ संस्कार ज्ञान विज्ञान" विषय पर सर्टिफिकेट कोर्स प्रारंभ करने से मातृशक्ति और अधिक सुदृढ़ होगी वहीं दूसरी ओर इस रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रम का लाभ भी समाज को मिलेगा। व्यक्तित्व विकास और रोजगारोन्मुखी यह पाठ्यक्रम पूरे मध्यप्रदेश के लिए अपने आप में एक अनूठी पहल साबित होगा। उपरोक्त विचार माननीय कुलपति प्रो. कपिल देव मिश्र ने रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के महिला अध्ययन एवं शोध केन्द्र द्वारा आयोजित बैठक के दौरान अपने ऑनलाईन संदेश में व्यक्त किए।

विवि महिला अध्ययन एवं शोध केन्द्र के द्वारा माननीय कुलपति जी के निर्देशानुसार त्रैमासिक सर्टिफिकेट कोर्स "गर्भ संस्कार ज्ञान विज्ञान" सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास आगामी सत्र से प्रस्तावित है। बैठक में विवि महिला अध्ययन एवं शोध केन्द्र विभागाध्यक्ष डॉ. राजेश्वरी राणा ने बताया कि उपरोक्त कोर्स संस्कृत, योग, संगीत एवं चिकित्सा विभाग के सहयोग से संचालित किया जाएगा। उपरोक्त कोर्स को अंतर विषयक अध्ययन मंडल समिति के माध्यम से स्वीकृत कराना होगा। बैठक में वरिष्ठ स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. अमिता सक्सेना ने बताया कि शांतिकुंज हरिद्वार द्वारा "आओ गढ़ें संस्कार की पीढ़ी" अभियान के माध्यम से गर्भ संस्कार की विधि को जन–जन तक पहुंचाने का कार्य किया जा रहा है। इस विधि में गर्भधारण के पूर्व ही गर्भ संस्कार की शुरूआत हो जाती है। गर्भिणी की दैनिक दिनचर्या, मासानुसार आहार, प्राणायाम, ध्यान, गर्भस्थ शिशु की देखभाल आदि का वर्णन गर्भ संस्कार

में किया गया है। गर्भिणी माता को प्रथम तीन महीने में बच्चे का शरीर सुडौल व निरोगी हो, इसके लिए प्रयत्न करना चाहिए। तीसरे से छठे महीने में बच्चे की उत्कृष्ट मानसिकता के लिए प्रयत्न करना चाहिए। छठे से नौंवे महीने में उत्कृष्ट बुद्धिमत्ता के लिए प्रयत्न करना चाहिए।

गर्भ संस्कार का ज्ञान विज्ञान–

बैठक में विभागाध्यक्ष डॉ. श्रीमती राजेश्वरी राणा ने बताया कि चिकित्सा विज्ञान के अनुसार गर्भ में शिशु किसी चौतन्य जीव की तरह व्यवहार करता है – वह सुनता और ग्रहण भी करता है। माता के गर्भ में आने के बाद से गर्भस्थ शिशु को संस्कारित किया जा सकता है। हमारे पूर्वज इन सब बातों से भली भॉति परिचित थे इसलिए उन्होंने गर्भाधान संस्कार को हमारी भारतीय संस्कृति में कराए जाने वाले सोलह संस्कारों में से एक संस्कार मान कर उसे पूर्ण पवित्रता के साथ संपन्न करने की प्रथा प्रचलित की थी। बैठक में उपरोक्त त्रैमासिक सर्टिफिकेट कोर्स आगामी सत्र से शुरू किए जाने की सहमति बनी। इस अवसर पर कला संकायाध्यक्ष प्रो. धीरेन्द्र पाठक, विवि हेल्थ सेंटर प्रभारी डॉ. संजय श्रीवास्तव, डॉ. जया सिंह आदि की उपस्थिति रही।